खुशनुमा जीवन जीने की कला करें विकसित

दीव। सभी आज अपने पद प्रतिष्ठा के साथ अपने आप को ज़िन्दा रखते हैं, लेकिन ये चीज़ें जब हम बड़े होते गए, उसके आधार से हमारे जीवन के साथ जुड़ती चली गईं। जिससे हम अपने आप को जोड़ते हुए सबके सामने एक लेबल चिपकाकर बात करते हैं। अगर इस लेबल को हटाएं और वास्तविकता को समझें तो जीवन खुशनुमा हो जाए।

उपरोक्त बातें दीव एयरपोर्ट अथॉरिटी पर अधिकारियों हेतु आयोजित किए गए कार्यक्रम में दिल्ली से आये मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. अनुज ने कहीं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि तनाव का कारण सिर्फ और सिर्फ अपने रियल्टी को ना जानना है। आप शरीर को चलाने हेतु पैसा कमाते हैं, उसके लिए चल कर ऑफिस आते, काम करते, शाम को थक जाते, लेकिन थकता तो हमारा शरीर है, मन नहीं है, क्योंकि मन शांति प्रेम और पवित्रता के आधार से ही अपने आप को खुश रख सकता है। क्योंकि खुशी और शांति हमारी वास्तविकता है। माउण्ट आबू से आये ओमशान्ति मीडिया पत्रिका के सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर ने कहा कि दुनिया में आप सब से बातें करते हैं, लेकिन एक इंसान है जिससे आप बात नहीं करते, वो हैं खुद आप। बस हमें करना क्या है, जैसे आप और कामों के लिए समय निकालते हैं, वैसे ही अपने लिए भी थोड़ा समय निकालकर, स्वचिंतन कर, अपने जीवन को खुशनुमा जीवन की तरफ ले जा सकते हैं। बस सुबह सुबह अपने आप को इस अभ्यास में उतारना है।

एयरपोर्ट अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अनुज। साथ हैं ब्र.कु. गंगाधर तथा अन्य।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. गीता ने सभी को अपने आशीर्वचन में कहा कि उपरोक्त बातों की गहराई को अनुभव करने के लिए हम साप्ताहिक कोर्स कर लें तो अच्छी तरह से इन बातों को समझ सकते हैं। उन्होंने एयरपोर्ट अधिकारियों को इसके लिए धन्यवाद किया कि उन्होंने ऐसा कार्यक्रम अपने यहाँ स्व-उन्नति के लिए आयोजित करवाया और अधिकारियों ने भी भविष्य में ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जाने की इच्छा जताई।

एयर इंडिया की मैनेजर बहन निलिमा ने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ के अपने अनुभव को सभी के सामने रखा। बाद में सभी अधिकारियों को केन्द्र की तरफ से भाग्य लिखने की कलम पुस्तक व प्रसाद भेंट किया गया। अंत में सभी को मेडिटेशन भी कराया गया।

मनमोहक 'दीदी मनमोहिनी'

दीदी मनमोहिनी का जन्म हैदराबाद (सिन्ध) के एक जाने-माने धनाढ्य कुल में हुआ था, अत: उन्हें धन से प्राप्त होने वाले सभी सांसारिक सुख उपलब्ध थे, किंतु वे मानसिक रूप से असंतुष्ट थीं। उसका कारण यह था कि उनकी लौकिक माता, युवावस्था में ही पति के देहत्याग के कारण बहुत अशांत रहती थीं। वे स्वयं अपने अनुभव से जानती थीं कि इस संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे सर्वांगीण एवं स्थायी सुख तथा शांति प्राप्त हो।

उनकी लौकिक माता जी को किसी ने बताया कि दादा लेखराज प्रतिदिन अपने निवास स्थान पर ऐसी प्रभावशाली एवं मधुर रीति से गीता सुनाते हैं कि बस, मन उसी में रम जाता है और जीवन-विधि अथवा संस्कारों में परिवर्तन के शुभ लक्षण प्रगट होने लगते हैं। दीदी जी की लौकिक माता वहाँ ज्ञान सुनने गयीं। पति के देहांत के कारण उनके मन में वैराग्य तो था ही, अत: अब उन्हें ज्ञान की सुगंधि, प्रभु-स्मृति का आधार, एक उच्च लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ करने की राह तथा उससे होने वाला हर्ष एवं आनंद भी प्राप्त हुआ। इसके बाद, शीघ्र ही दीदी जी भी, जिनका लौकिक नाम गोपी था, गीताज्ञान की प्यास और प्रभु-मिलन की आश लिये वहाँ गयीं। वहाँ पहुँचने पर उन्हें ऐसा लगा कि जिस सच्चे गीता-ज्ञानदाता की उन्हें खोज थी, अब वह उन्हें मिल गया है। अत: बाबा ने अपने प्रवचनों में, जिन्हें अलौकिक भाषा में 'मुरली' कहा जाता है, पूर्ण पवित्रता का व्रत लेने के लिए जो घोषणा की, उसके उत्तर में, दीदी जी ने अन्य अनेकों की तरह इस महान् व्रत को सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने यह मन में ठान लिया कि ब्रह्मचर्य व्रत के पालन के लिए वे सारे संसार का सामना करने के लिए सिर पर पहाड़ ढ़ह जाने की तरह कष्टों का और सब प्रकार की कठिनाइयों का सामना करेंगी। यहाँ तक कि यदि उनका शरीर भी चला जाये तो वे उसकी बलि देंगी परंतु वे इस व्रत से नहीं टलेंगी।

परखने की शक्तिशाली शक्ति

दीदी जी में किसी व्यक्ति को परखने की शक्ति बड़ी शक्तिशाली थी। जैसे धनवन्तरी (वैद्य), व्यक्ति की नब्ज से उसके रोग को जान लेता था, वैसे ही सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को दीदी जी चेहरे, हाव-भाव अथवा अल्प वार्ता से तुरंत ही जानकर उसकी आध्यात्मिक समस्या का निदान कर उसे ठीक हल सुझाती थीं। अपनी इस विशेषता के कारण उन्होंने सैकड़ों, हज़ारों व्यक्तियों को पवित्रता एवं योग के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया, जिससे अनेकानेक कन्याओं एवं माताओं ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवार्थ अथवा लोक-कल्याणार्थ समर्पित कर दिया।

मन की सच्चाई-सफाई तथा अमृतवेले याद की यात्रा पर ज़ोर

दीदी जी ने प्रारंभ से ही बाह्य एवं आंतरिक सफाई-सच्चाई तथा स्वावलम्बी जीवन पर विशेष बल दिया। वे ईश्वरीय मार्ग पर सद्गुरू परमात्मा शिव की शिक्षाओं के प्रति फरमान-वरदार और वफादार बने रहने के लिए ही हमेशा सीख देती रहीं। नित्य ब्रह्ममुहूर्त उठकर ईश्वरीय याद रूपी यात्रा करने पर बल दिया तथा इस प्रकार नियम पूर्वक दिनचर्या का पालन करने के लिए वे विशेष ध्यान दिलातीं।

अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका का कर्त्तव्य कर सेवाकेन्द्रों में वृद्धि

अपनी कुशाग्र बुद्धि, व्यक्तियों की परख, प्रेम, मर्यादा पालन, नियमित विद्यार्थी जीवन तथा अथक सेवा के कारण वे एक कुशल प्रशासिका भी बनीं। इसलिए सन 1951-52 से लेकर

(जब से ईश्वरीय सेवायें प्रारंभ हुईं) सन् 1961 तक वे कंट्रोलर अथवा प्रशासन-अभियंता एवं नियंत्रक नियुक्त रहीं और जनवरी सन् 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा के अव्यक्त होने के बाद इसकी मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी के साथ अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका के रूप में सेवारत थीं। इन दोनों के कुशल प्रशासन में परमपिता परमात्मा शिव के प्रशिक्षण एवं संरक्षण में ईश्वरीय विश्व विद्यालय के विश्वभर में लगभग 1150 सेवाकेन्द्र और उपसेवाकेन्द्र थे। दीदी जी अपने हर प्रवचन में यह ज़रूर जताती थीं कि 'अब घर (परमधाम) जाना है'। इसलिए वे पुरानी बातों को भूलकर हल्का होने, दूसरों के अवगुण न देख, गुण देखने और नित्य निरंतर श्रीमत के अनुसार चलने की बात ज़रूर कहती थीं।

प्रशासनिक कुशलता

दीदी जी के जीवन में अनेक दिव्यगुण अपने चरम उत्कर्ष पर थे। वे बहत्तर वर्ष की आयु में भी आश्चर्यचकित कर देने वाली स्फूर्ति और चेतना के साथ काम करती थीं। मधुबन में देश के कोने-कोने से तथा विदेशों से हज़ारों भाई बहनें आते थे तो उनका कार्य-उत्तरदायित्व इतना बढ़ जाता था कि एक अच्छे युवक या युवती के लिए भी संभालना कठिन था परंतु उन्होंने एक तो सारी व्यवस्था को दादी जी के साथ मिलकर ऐसा बना रखा था कि कार्य सुचारू रूप से चलता रहता था और वे स्वयं भी कार्य-प्रवाह से परिचित एवं सूचित रहती थीं तथा ध्यान देती थीं।

स्नेहमयी व्यक्तित्व

दीदी जी की यह एक विशेषता थी कि वे सम्पर्क में आये व्यक्ति को स्नेह से अपना बना लेतीं। वे किसी को माँ जैसा प्यार देकर या किसी को उसकी समस्या का हल देकर स्नेह के सूत्र में बांध कर, उससे कोई न कोई बुराई छुड़वा देतीं। जो बात वह व्यक्ति अन्य किसी से नहीं मानता था, दीदी उसे सहज ही मनवा देतीं। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण था। उनसे बात करने में किसी को भी भय महसूस नहीं होता था बल्कि उनके स्नेह के स्पन्दनों से उनकी ओर खिंच जाता था और दीदी उसे आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ा देतीं। उनके सम्पर्क में आते रहने वाला व्यक्ति प्राय: ज्ञान-विमुख नहीं होता।

विनोद-प्रिय

दीदी जी केवल तपस्यामूर्त ही नहीं, बल्कि विनोद-प्रिय भी रहीं। वे चुटकुले सुनती और सुनाती थीं, परंतु वे चुटकुले भी शालीन और अलौकिकता की ओर ले जाने वाले होते। वे शुष्क स्वभाव की नहीं बल्कि इतनी आयु में भी बाल-स्वभाव की तरह सरल और हास्य-प्रिय थीं। ऐसी मनमोहक दीदी मनमोहिनी को उनके पुण्य स्मृति दिवस पर सभी ब्रह्मावत्सों की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित।